योना

परमेश्वर का बुलावा और योना का भागना

1 अमित्तै के पुत्र योना से यहोवा ने कहा। यहोवा ने कहा, 2"नीनवे एक बड़ा नगर है। वहाँ के लोग जो पाप कर्म कर रहे हैं, उनमें बहुत से कुकर्मों के बारे में मैंने सुना है। इसलिए तू उस नगर में जा और वहाँ के लोगों को बता कि वे उन बुरे कर्मों का करना त्याग दें।"

3योना परमेश्वर की बात नहीं मानना चाहता था, सो योना ने यहोवा से कहीं दूर भाग जाने का प्रयत्न किया। सो योना यापो की ओर चला गया। योना ने एक नौका ली जो सुदूर नगर तर्शीश को जा रही थी। योना ने अपनी यात्रा के लिए धन दिया और वह नाव पर जा चढ़ा। योना चाहता था कि इस नाव पर वह लोगों के साथ तर्शीश चला जाये और यहोवा से कहीं दूर भाग जाये।

भयानक तूफान

4किन्तु यहोवा ने सागर में एक भयानक तूफान उठा दिया। आँधी से सागर में थपेड़े उठने लगे। तूफान इतना प्रबल था कि वह नाव जैसे बस टूक टूक होने जा रही थी। 5लोग चाहते थे कि नाव को डूबने से बचाने के लिये उसे कुछ हलका कर दिया जाये। सो वे नाव के सामान को उठा कर समुद्र में फेंकने लगे। मल्लाह बहुत डरे हुए थे। हर व्यक्ति अपने अपने देवता से प्रार्थना करने लगा।

योना सोने के लिये नाव में नीचे चला गया था। योना सो रहा था। 6 नाव के प्रमुख खिवैया ने योना को इस रूप में देखकर कहा, "उठ! तू क्यों सो रहा है? अपने देवता से प्रार्थना कर! हो सकता है, तेरा देवता तेरी प्रार्थना सुन ले और हमें बचा ले!"

यह तूफान क्यों आया?

7 लोग फिर आपस में कहने लगे, "हमें यह जानने के लिये कि हम पर ये विपत्तियाँ किसके कारण पड़ रही हैं, हमें पासे फेंकने चाहियें।"

सो लोगों ने पासे फेंके। पासों से यह प्रकट हुआ कि यह विपत्ति योना के कारण आई है। 8इस पर लोगों ने योना से कहा, "यह किसका दोष है, जिसके कारण यह विपत्ति हम पर पड़ रही है! सो तूने जो किया है, उसे तू हमें बता। हमें बता तेरा काम धन्धा क्या है? तू कहाँ से आ रहा है? तेरा देश कौन सा है? तेरे अपने लोग कौन हैं?"

9योना ने लोगों से कहा, "मैं एक हीब्रू (यहूदी) हूँ और स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा की उपासना करता हूँ। वह वही परमेश्वर है, जिसने सागर और धरती को रचा है।"

10योना ने लोगों से कहा कि, वह यहोवा से दूर भाग रहा है। जब लोगों को इस बात का पता चला, तो वह बहुत अधिक डर गये। लोगों ने योना से पूछा, "तूने अपने परमेश्वर के विरुद्ध क्या बुरी बात की है?"

11उधर आँधी तूफान और समुद्र की लहरें प्रबल से प्रबलतर होती चली जा रही थीं। सो लोगों ने योना से कहा, "हमें अपनी रक्षा के लिये क्या करना चाहिये? समुद्र को शांत करने के लिये हमें तेरे साथ क्या करना चाहिये?"

12योना ने लोगों से कहा, "मैं जानता हूँ कि मेरे कारण ही समुद्र में यह तूफान आया है। सो तुम लोग मुझे समुद्र में फेंक दो। इससे तूफान शांत हो जायेगा।"

13किन्तु लोग योना को समुद्र में फेंकना नहीं चाहते थे। लोग नाव को तट पर वापस लाने के लिये, उसे खेने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु वे वैसा कर नहीं पाये, क्योंकि आँधी, तूफान और सागर की लहरें बहुत शक्तिशाली थीं और वे प्रबल से प्रबल होती चली जा रही थीं!

योना का दण्ड

14सो लोगों ने यहोवा को पुकारते हुए कहा, "हे
यहोवा, इस पुरुष को हम इसके उन बुरे कामों के
लिए समुद्र में फेंक रहे हैं, जो इसने किये हैं। कृपा कर
के, तू हमें किसी निरपराध व्यक्ति का हत्यारा मत
कहना। इसके वध के लिए तू हमें मत मार डालना।
हम जानते हैं कि तू यहोवा है और तू जैसा चाहेगा, वैसा
ही करेगा। किन्तु कृपा करके हम पर दयालु हो।"
15सो लोगों ने योना को समुद्र में फेंक दिया। तूफ़ान
रुक गया, सागर शांत हो गया! 16जब लोगों ने यह
देखा, तो वे यहोवा से डरने लगे और उसका सम्मान
करने लगे। लोगों ने एक बलि अर्पित की, और यहोवा
से विशेष मन्नते माँगी।
17योना जब समुद्र में गिरा, तो यहोवा ने योना को
निगल जाने के लिए एक बहुत बड़ी मछली भेजी। योना
तीन दिन और तीन रात तक उस मछली के पेट में रहा।

2 योना जब मछली के पेट में था, तो उसने अपने
परमेश्वर यहोवा की प्रार्थना की। योना ने कहा,
2"मैं गहरी विपत्ति में था। मैंने यहोवा की दुहाई दी
और उसने मुझको उत्तर दिया! मैं गहरी कब्र के बीच था
हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा और तूने मेरी पुकार सुनी!
3"तूने मुझको सागर में फेंक दिया था। तेरी शक्तिशाली
लहरों ने मुझे थपेडे मारे मैं सागर के बीच में, मैं गहरे से
गहरा उतरता चला गया। मेरे चारों तरफ बस पानी ही
पानी था। 4फिर मैंने सोचा, 'अब मैं, जाने को विवश हूँ,
जहाँ तेरी दृष्टि मुझे देख नहीं पाएगी।' किन्तु मैं सहायता
पाने को तेरे पवित्र मन्दिर की ओर निहारता रहूँगा।
5"सागर के जल ने मुझे निगल लिया है। पानी ने
मेरा मुख बन्द कर दिया, और मेरा साँस घुट गया। मैं
गहन सागर के बीच मैं उतरता चला गया मेरे सिर के
चारों ओर शैवाल लिपट गये हैं। 6मैं सागर की तलहटी
पर पड़ा था, जहाँ पर्वत जन्म लेते हैं। मुझको ऐसा
लगा, जैसे इस बन्दीगृह के बीच सदा सर्वदा के लिये
मुझ पर ताले जड़े हैं। किन्तु हे मेरे परमेश्वर यहोवा,
तूने मुझको मेरी इस कब्र से निकाल लिया! हे
परमेश्वर, तूने मुझको जीवन दिया!
7"जब मैं मूर्छित हो रहा था। तब मैंने यहोवा का
स्मरण किया हे यहोवा, मैंने तुझसे विनती की और
तूने मेरी प्रार्थनाएं अपने पवित्र मन्दिर में सुनी। 8कुछ
लोग व्यर्थ के मूर्तियों की पूजा करते हैं, किन्तु उन
मूर्तियों ने उनको कभी सहारा नहीं दिया। 9मुक्ति तो
बस केवल यहोवा से आती है! हे यहोवा, मैं तुझे बलियाँ
अर्पित करूँगा, और तेरे गुण गाऊँगा। मैं तेरा धन्यवाद
करूँगा। मैं तेरी मन्नते मानूँगा और अपनी मन्नतों
को पूरा करूँगा।"
10फिर यहोवा ने उस मछली से कहा और उसने योना
को सूखी धरती पर अपने पेट से बाहर उगल दिया।

परमेश्वर का बुलावा और योना का आज्ञापालन

3 इसके बाद यहोवा ने योना से फिर कहा। यहोवा
ने कहा, 2"तू नीनवे के बड़े नगर में जा और वहाँ
जा कर, जो बातें मैं तुझे बताता हूँ, उनकी शिक्षा दे।"
3सो यहोवा की आज्ञा मान कर योना नीनवे को चला
गया। नीनवे एक विशाल नगर था। वह इतना विशाल था,
कि उस नगर में एक किनारे से दूसरे किनारे तक व्यक्ति
को पैदल चल कर जाने में तीन दिन का समय लगता था।
4 सो योना ने नगर की यात्रा आरम्भ की और सारे
दिन चलने के बाद, उसने लोगों को उपदेश देना
आरम्भ कर दिया। योना ने कहा, "चालीस दिन बाद
नीनवे तबाह हो जायेगा!"
5परमेश्वर की ओर से मिले इस सन्देश पर, नीनवे
के लोगों ने विश्वास किया और उन लोगों ने कुछ
समय के लिए खाना छोड़ कर अपने पापों पर
सोच–विचार करने का निर्णय़ लिया। लोगों ने अपना
दु:ख व्यक्त करने के लिये विशेष प्रकार के वस्त्र
धारण कर लिये। नगर के सभी लोगों ने चाहे वे बहुत
बड़े या बहुत छोटे हो, ऐसा ही किया।
6नीनवे के राजा ने ये बातें सुनीं और उसने भी
अपने बुरे कामों का शोक मनाया। इसके लिये राजा
ने अपना सिंहासन छोड़ दिया। उसने अपने राजसी
वस्त्र हटा दिये और अपना दु:ख व्यक्त करने के लिए
शोकवस्त्र धारण कर लिये। इसके बाद वह राजा
धूल में बैठ गया। 7राजा ने एक विशेष सन्देश लिखवाया
और उस सन्देश की सारे नगर में घोषणा करवा दी:

राजा और उसके बड़े शासकों की ओर से
आदेश था:

कुछ समय के लिये कोई भी पुरुष अथवा कोई
भी पशु कुछ भी नहीं खायेगा। किसी रेवड़ या

पशुओं के झुण्ड को चरागाहों में नहीं जाने दिया
जायेगा। नीनवे के सजीव प्राणी न तो कुछ खायेंगे
और न ही जल पीयेंगे। 8बल्कि हर व्यक्ति और
हर पशु टाट धारण करेंगे जिससे यह दिखाई दे
कि वे दु:खी हैं। लोग ऊँचे स्वर में परमेश्वर
को पुकारेंगे। हर व्यक्ति को अपना जीवन
बदलना होगा और उसे चाहिये कि वह बुरे कर्म
करना छोड़ दे। 9तब हो सकता है कि परमेश्वर
की इच्छा बदल जाये और उसने जो योजना रच
रखी है, वैसी बातें न करे। हो सकता है परमेश्वर
की इच्छा बदल जाये और कुपित न हो। तब हो
सकता है कि हमें दण्ड न दिया जाये।
10 लोगों ने जो बातें की थी, उन्हें परमेश्वर ने देखा।
परमेश्वर ने देखा कि लोगों ने बुरे कर्म करना बन्द
कर दिया है। सो परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया
और जैसा करने की उसने योजना रची थी, वैसा नहीं
किया। परमेश्वर ने लोगों को दण्ड नहीं दिया।

परमेश्वर की करुणा से योना कुपित

4 योना इस बात पर प्रसन्न नहीं था कि परमेश्वर ने
नगर को बचा लिया था। योना क्रोधित हुआ।
2उसने यहोवा से शिकायत करते हुए कहा, "मैं जानता
था कि ऐसा ही होगा! मैं तो अपने देश में था, और तूने
ही मुझसे यहाँ आने को कहा था। उसी समय मुझे यह
पता था कि तू इस पापी नगर के लोगों को क्षमा कर
देगा। मैंने इसलिये तर्शीश भाग जाने की सोची थी। मैं
जानता था कि तू एक दयालु परमेश्वर है! मैं जानता था
कि तू करुणा दर्शाता है और लोगों को दण्ड देना नहीं
चाहता! मुझे पता था कि तू करुणा से पूर्ण है! मुझे ज्ञान
था कि यदि इन लोगों ने पाप करना छोड़ दिया तो तू
इनके विनाश की अपनी योजनाओं को बदल देगा। 3सो
हे यहोवा, अब मैं तुझसे यही माँगता हूँ, कि तू मुझे मार
डाल। मेरे लिये जीवित रहने से मर जाना उत्तम है!"
4इस पर यहोवा ने कहा, "क्या तू सोचता है कि
बस इसलिए कि मैं ने उन लोगों को नष्ट नहीं किया,
तेरा क्रोध करना उचित है?"

5इन सभी बातों से योना अभी भी कुपित था। सो
वह नगर के बाहर चला गया। योना एक ऐसे स्थान पर
चला गया था जो नगर के पूर्वी प्रदेश के पास ही था।
योना ने वहाँ अपने लिये एक पड़ाव बना लिया। फिर
उसकी छाया में वहीं बैठे–बैठे वह इस बात की बाट
जोहने लगा कि देखें इस नगर के साथ क्या घटता है?

रेंड़ का पौधा और कीड़ा

6उधर यहोवा ने रेंड़ का एक ऐसा पौधा लगाया जो
बहुत तेज़ी से बढ़ा और योना पर छा गया। इसने योना
को बैठने के लिए एक शीतल स्थान बना दिया। योना
को इससे और अधिक आराम प्राप्त हुआ। इस पौधे
के कारण योना बहुत प्रसन्न था।
7अगले दिन सुबह उस पौधे का एक भाग खा डालने
के लिये परमेश्वर ने एक कीड़ा भेजा। कीड़े ने उस पौधे
को खाना शुरु कर दिया और वह पौधा मुरझा गया।
8सूरज जब आकाश में ऊपर चढ़ चुका था, परमेश्वर
ने पुरवाई की गर्म हवाएँ चला दीं। योना के सिर पर सूरज
चमक रहा था, और योना एक दम निर्बल हो गया था।
योना ने परमेश्वर से चाहा कि वह उसे मौत दे दे। योना ने
कहा, "मेरे लिये जीवित रहने से अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।"
9किन्तु परमेश्वर ने योना से कहा, "बता, तेरे विचार
में क्या सिर्फ इसलिए कि यह पौधा सूख गया है, तेरा
क्रोध करना उचित है?"

योना ने उत्तर दिया, "हाँ, मेरा क्रोध करना उचित
ही है! मुझे इतना क्रोध आ रहा है कि जैसे बस मैं
अपने प्राण ही दे दूँ!"
10इस पर यहोवा ने कहा, "देख, उस पौधे के लिये
तूने तो कुछ भी नहीं किया! तूने उसे उगाया तक नहीं।
वह रात में फूटा था और अगले दिन नाश हो गया और
अब तू उस पौधे के लिये इतना दु:खी है। 11यदि तू उस
पौधे के लिए व्याकुल हो सकता है, तो देख नीनवे जैसे
बड़े नगर के लिये जिसमें बहुत से लोग और बहुत से पशु
रहते हैं, जहाँ एक लाख बीस हजार से भी अधिक लोग
रहते हैं और जो यह भी नहीं जानते कि वे कोई गलत
काम कर रहे हैं, उनके लिये क्या मैं तरस न खाऊँ!"

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html